''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

Faculty of Ayurvedic Science

Faculty Name - JV'n Kavita Sharma

Program - BAMS 1st Year

Course - Sanskrit

Session - आयुर्वेद का काल-विभाजन

Academic Day starts with –

- Greeting with saying 'Namaste' by joining Hands together following by 2-3 Minutes Happy session, Celebrating birthday of any student of respective class and National Anthem

Lecture Starts with-

Review of previous Session- In previous session as I had discussed about आयुर्वेद का अवतरण

Topic to be discussed today- आयुर्वेद का काल-विभाजन

- **Lesson deliverance (ICT, Diagrams & Live Example)-**
- **PPT (10 Slides)**
- **WhiteBoardandMarker**

संहिताकाल

संहिताकाल का समय ५वीं शती ई.पू. से ६वीं शती तक माना जाता है। यह काल आयुर्वेद की मौलिक रचनाओं का युग था। इस समय आचार्यो ने अपनी प्रतिभा तथा अनुभव के बल पर भिन्न-भिन्न अंगों के विषय में अपने पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया। आयुर्वेद के त्रिमुनि- चरक, सुश्रुत और वाग्भट, के उदय का काल भी सं हिताकाल ही है। चरक संहिता ग्रन्थ के माध्यम से कायचिकित्सा के क्षेत्र में अद्‌भुत सफलता इस काल की एक प्र मुख विशेषता है।

व्याख्याकाल

इसका समय ७वीं शती से लेकर १५वीं शती तक माना गया है तथा यह काल आलोचनाओं एवं टीकाकारों के लिए जाना जाता है। इस काल में संहिताकाल की रचनाओं के ऊपर टीकाकारों ने प्रौढ़ और स्वस्थ व्याख्यायें निरुपित कीं। इस समय के आचार्य डल्हड़ की सुश्रुत संहिता टीका आयुर्वेद जगत् में अति महत्वपूर्ण मानी जाती है।

शोध ग्रन्थ 'रसरत्नसमुच्चय' भी इसी काल की रचना है, जिसे आचार्य वाग्भट ने चरक और सुश्रुत संहिता और अनेक रसशास्त्रज्ञों की रचना को आधार बनाकर लिखा है।

विवृतिकाल

इस काल का समय १४वीं शती से लेकर आधुनिक काल तक माना जाता है। यह काल विशिष्ट विषयों पर ग्रन्थों की रचनाओं का काल रहा है। माधवनिदान, ज्वरदर्पण आदि ग्रन्थ भी इसी काल में लिखे गये। चिकित्सा के विभिन्न प्रारुपों पर भी इस काल में विशेष ध्यान दिया गया,

जो कि वर्तमान में भी प्रासंगिक है। इस काल में आयुर्वेद का विस्तार एवं प्रयोग बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है।

स्पष्ट है कि आयुर्वेद की प्राचीनता वेदों के काल से ही सिद्ध है। आधुनिक चिकित्सापद्धति में सामाजिक चिकित्सा पद्धति को एक नई विचारधरा माना जाता है, परन्तु यह कोई नई विचारधारा नहीं अपितु यह उसकी पुनरावृत्ति मात्र है, जिसका उल्लेख 2500 वर्षों से भी पहले आयुर्वेद में किया गया है।

- **Introduction and History of Ayurveda**
  Competitive Questions From today Topics (2 Question Minimum)-

(i) पुराणो की संख्या है

(A) 11 (B) 14 (16) (C) 18 (D) 8

(iii) वेद का दूसरा नाम है ?

श्रुति“ (b) विद्वान (c) यजु (d) रूपांतरण

Suggestions to secure good marks to answer in exam-

Give answer properly.

Explain answer with key point answer

- **Next Topic-**
- **“**आयुर्वेद का अवतरण

- **Academic Day Ends with –**
  National Song **“Vande Mataram”**